9

औपनिवेशिक युग तथा भारतीय सिपाही

हमने पिछले पाठों से जाना कि किस प्रकार भारत में सैन्य प्रणाली अस्तित्व में आई और किस प्रकार सदियों के दौरान परिवर्तन हुए। आइए हम इस पाठ में यह समझने का प्रयास करें कि किस तरह भारत में यूरोपीय लोग आए तथा हमारे देश में शासन किया और इस प्रक्रिया में भारतीय सेना की ऐसी नींव रखी जो आधुनिक युद्ध लड़ने के योग्य है।

जैसा कि आप जानते हैं कि भारत के उत्तर में हिमालय के रूप में पर्वतीय अवरोध है और यह दक्षिण में अरब सागर; पश्चिम और पूर्व में बंगाल की खाड़ी से घिरा हुआ है। इस प्रकार एक प्रायद्वीप के रूप में यह एक बहुसांस्कृतिक तथा बहुजातीय समाज का देश है जिसमें कई प्रकार के धर्म तथा भाषाएं पाई जाती हैं।

मुगल शासन के पश्चात अंग्रेजों ने भारत को उपनिवेश बनाना प्रारंभ किया। भारत तब एक राष्ट्र वाला देश नहीं था जिसमें एक केन्द्रीय सेना या राजा होता। विभिन्न छोटे-छोटे राज्य थे जिन्होंने यूरोपीय बस्तियों का समर्थन किया। पहले पुर्तगाली आए, इसके बाद फ्रांसीसी और ब्रिटिश आए।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:-

- भारत में औपनिवेशिक शासन का इतिहास स्पष्ट कर सकेंगे;
- तीन प्रेसीडेंसी मद्रास, कोलकाता तथा मुम्बई की स्थापना का वर्णन कर सकेंगे;
- अंग्रेजों के द्वारा देशी भारतीय सेना के गठन के लिए उत्तरदायी परिस्थितियों की पहचान तथा ब्रिटिश फौज में रैंक संरचना के बारे में जान सकेंगे।

9.1 भारत में औपनिवेशिक शासन का इतिहास

सैन्य इतिहास दृष्टि से भारत में ब्रिटिश आगमन की परिस्थितियों को जानना आवश्यक है जिसके कारण यूरोपीय लोग यहां अपने पैर जमा सके। छोटे राज्यों में बंटे होने के कारण वे

कमजोर थे तथा आसानी से विदेशी ताकतों के अधीन हो गए। इसी कारण अंग्रेज भारत का शोषण कर पाए। दुर्भाग्य से यहां कोई एक साम्राज्य नहीं था अपितु, छोटे-छोटे रजवाड़ों और जमींदारों इत्यादि का सम्मिलित देश था। हमारे इतिहास में इस काल में यूरोप के चार प्रमुख देश भारत में व्यापार के लिए आए क्योंकि भारत संस्कृति, परम्पराओं और धन दौलत से समृद्ध देश था। इन देशों में पुर्तगाल, फ्रांस, हालैण्ड और ब्रिटेन शामिल थे। आइए देखें कि किस प्रकार उन्होंने 16वीं शताब्दी से 1947 ई. तक भारत का शोषण किया।

9.1.1 पुर्तगालियों का भारत में आगमन

क्या आप जानते हैं कि भारत में सर्वप्रथम व्यापार हेतु कौन आया? इसका उत्तर है पुर्तगाली। भारतीय इतिहास में समुद्र द्वारा व्यापार का रास्ता बनाना एक ऐतिहासिक कदम है। 15वीं शताब्दी तक पुर्तगाली न केवल अफ्रीका के पश्चिमी छोर पर आए थे बल्कि 'केप ऑफ गुड होप' के भी बड़े हिस्से को अपने कब्जे में ले लिया था। पुर्तगालियों के आने का मुख्य कारण मसाले खोजना और ईसाई धर्म का प्रचार करना था। 17 मई, 1498 को वास्कोडिगामा भारत के कालीकट आया। भारत के समृद्ध संसाधनों का उपयोग करने और अपने वाणिज्यिक विकास के लिए भारत में कारखानों की स्थापना की गई तथा उनका मुख्य उद्देश्य व्यापार को सुनिश्चित करना था। पुर्तगालियों ने तटीय भारत पर अधिकार जमा लिया। साथ ही उन्होंने अपनी सेना की नियुक्ति ऐसे स्थानों पर की जो व्यापार के लिए अति महत्वपूर्ण थे जैसे लाल सागर तथा भारत के बाहर कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों में। उन्होंने सेना की नियुक्ति ऐसे स्थानों पर की जिससे कालीकट के जोमोरिन तथा मुस्लिम शासकों से किसी प्रकार का विवाद न हो। उन्होंने पुर्तगाली लोगों पर शासन के लिए वायसराय की नियुक्ति भी की। 1505 के प्रारंभ में फ्रांसिसकों डी सेलेमीडिया ने जहाजी बेड़ा तथा 1500 सैनिकों की सेना तैयार की। इस सेना के पास किलवा, अंजाड़ीवा, कानौर तथा कोचीन में किले बनवाने के आदेश थे। 1510 में अल्फोंजो दी अल्बर्की ने गोवा को बीजापुर के सुल्तान से छीनकर इसे पुर्तगाल के पूर्वी शासन की राजधानी बनाया। इसके अलावा पुर्तगालियों के लिए गुजरात में दीव अन्य मुख्य केन्द्र था। पुर्तगाली विस्तार की मानचित्र 9.1 में आप देख सकते हैं।

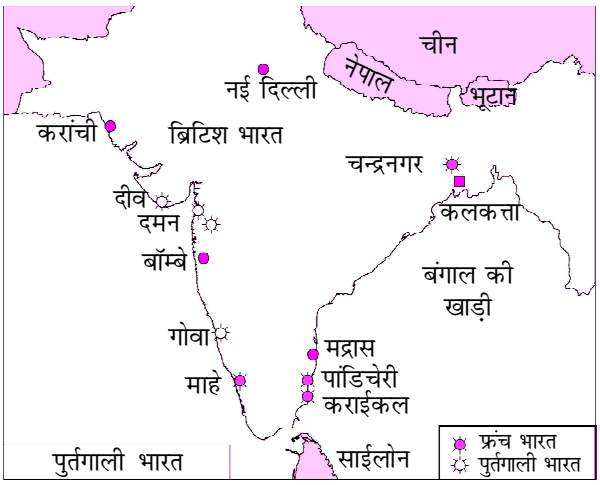

मानचित्र 9.1

पाठगत प्रश्न 9.1

1. भारत में सर्वप्रथम किसका आगमन हुआ था?
2. 1498 में कालीकट में किसका आगमन हुआ था?

9.1.2 भारत में डच का आगमन

क्या आप जानते हैं कि डच कौन थे? हॉलैंड के निवासियों को डच कहा जाता है। पुर्तगालियों के बाद डच आए। उन्होंने भारतीय समुद्र पार करके भारतीय क्षेत्र पर कदम रखा। उनका मुख्य उद्देश्य व्यापार करना था। 1602 में यूनाइटेड ईस्ट इंडिया कंपनी आफ नीदरलैंड का गठन किया गया तथा उसे ईस्ट इंडीज तथा भारत में व्यापार करने की अनुमति दी गई। डच कंपनी ने यहां फैक्ट्रियों की स्थापना की। फैक्ट्री के लिए ऐसे स्थान चुने गए जहां से वह अपने देश आसानी से आ जा सके। इनका उद्देश्य अपने कारोबार की ओर ध्यान खींचना तथा इनको विकसित करना था। 1605 में पहली डच फैक्ट्री एडमिरल वेन डर हाजेन द्वारा मुसलीपट्नम, आंध्र प्रदेश में स्थापित की गयी। अन्य फैक्ट्रियों का निर्माण पेटापोली (निजामापट्नम), तिरूपापयूलीर और देवनम्पटनम में किया गया। 1610 में डच ने चंद्रगिरी के राजा के साथ वार्ता की और पालीकट में एक फैक्ट्री का निर्माण किया। इस फैक्ट्री की किले बंदी की गयी और इसे 'गेलड्रिया' का नाम दिया गया। पालीकट के मुखिया वेन डर ब्रोक गवर्नर बन गए और सूरत में एक फैक्ट्री स्थापित की। 1627 में डच बंगाल का गठन हुआ। डच ने बांबे, अहमदाबाद, आगरा, बुरहानपुर, बिमलीपट्म, कारीकल, चिनसूरा, पटना, बालासोर, कोचीन, कासिमबाजार, गुसतावस आदि में कई फैक्ट्रियों का निर्माण किया। अन्य डच फैक्ट्रियां पुर्तगाली फैक्ट्रियों से अधिक सफल थीं।

ब्रिटिश को भारत में स्थापित होने के लिए डच लोगों के विस्तार की चुनौती का सामना करना पड़ा। इसी कारण उनमें युद्ध हुए। एगलो डच शत्रुता के कारण 1741 में कोलचेल युद्ध में त्रावनकोर के मार्तण्ड वर्मा ने मालावार की डच ईस्ट इंडिया कंपनी को परास्त कर दिया। इससे डच के मुख्य क्षेत्र अंग्रेजों के कब्ज़े में आ गए।

9.1.3 भारत में फ्रांसीसियों का आगमन

पुर्तगाली व डच के बाद फ्रांस ने भी अपना व्यापारिक आधिपत्य स्थापित करने का प्रयास किया। 1664 में जीन बापटिस्ट कोलबर्ट ने फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापन की। (मानचित्र 9.2) कंपनी ने सूरत में फ्रांसिस कार्न के नेतृत्व में पहली फैक्ट्री 1668 में स्थापित की। दूसरी फैक्ट्री मुसालीपट्नम में स्थापित हुई। 1674 में फ्रांसिस मार्टिन के नेतृत्व में फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी ने पांडिचेरी में व्यापारिक केन्द्र की स्थापना की। 1693 में डच ने पांडिचेरी पर कब्जा कर लिया किन्तु बाद में इसे फ्रांस को लौटा दिया गया। फ्रांसीसी सेना ने 1720 में माहे, 1731 में यानम, 1738 में काराईकल पर अधिकार कर लिया। चंद्रनगर बंगाल में एक अन्य फैक्ट्री की स्थापना की गयी। 1701 में पांडिचेरी को भारत के फ्रांसीसी उपनिवेश की राजधानी बनाया गया। फ्रांसिस मार्टिन प्रेसीडेंट था जिसे भारत में फ्रांसीसी मामलों का सुपरियर कौंसिल तथा

डायरेक्टर जनरल के पद पर नियुक्त किया गया। 1742 में जोसेफ फ्रेंको डुप्ले भारतीय फ्रांसीसी साम्राज्य का नया शासक बना।

1746 में उसने मद्रास को जीता किन्तु पड़ोस के ब्रिटिश किला सेन्ट डेविड पर कब्जा करने में नाकाम रहा। ब्रिटिश व फ्रांस के मध्य युद्ध का एक सिलसिला शुरू हुआ। 1744 में ब्रिटिश अफसर रावर्ट क्लाइव ने डुप्ले का फ्रांसीसी क्षेत्र बढ़ाने का सपना तोड़ दिया। 1756-63 के मध्य चले 7 वर्षीय युद्ध में अंग्रेजों ने फ्रांस को हराकर 1761 में उनकी राजधानी पर कब्जा कर लिया। फ्रेंच कपनी को उनकी सरकार ने मदद नहीं दी। 1765 में संधि द्वारा पांडिचेरी को फ्रांस को वापिस किया गया। 1816 के नेपोलियन युद्ध के पश्चात पांडिचेरी, कराईकल, यनम, मोह, चंद्रनगर, सूरत, मछलीपट्नम और कोमीकोड इलाके फ्रांस को अंग्रेजों ने वापिस दे दिये। भारत में फ्रांसीसी उपनिवेश बिना किसी ब्रिटिश दखल के अलग बने रहे।

मानचित्र 9.2

पाठगत प्रश्न 9.2

1. मसौलीपटनम् में प्रथम डच फैक्ट्री की स्थापना किसने की थी?
2. डच द्वारा संचालित फैक्ट्रियां कहां स्थापित की गयी? उन स्थानों के नाम लिखिए।
3. भारत में फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना किसने की?

9.1.4 ब्रिटिश का भारतीय आगमन

जैसा कि हम जानते हैं कि ब्रिटिश कंपनी 1612 में भारत आई थी। इसके आगमन का मुख्य उद्देश्य व्यापार हेतु फैक्ट्रियां स्थापित करना था। कंपनी ने स्थानीय शासकों से मित्रता करके अपनी स्थिति मजबूत की। ब्रिटिश कंपनी ने देशी शासकों का चतुराई से शोषण किया। उनकी कमजोरी का लाभ उठाया। ब्रिटिश कंपनी के पास कुछ सेनाएं भी थी जिनको बाद में स्थानीय भारतीय सिपाहियों की भर्ती के द्वारा मदद मिली। 1757 में 'प्लासी' का युद्ध जीतने के बाद भारत में कम्पनी के पैर जम गए। बक्सर का युद्ध 1764 में ब्रिटिश सेना ने जीता। इस युद्ध में ईस्ट इंडिया कंपनी का सामना मुगल शासक शाह आलम द्वितीय की सेना, अवध के नवाब व बंगाल के नवाब की इकट्ठी सेना से था। इस युद्ध के बाद बॉम्बे व मद्रास में भी कंपनी ने अपने क्षेत्र का विस्तार किया। 'एंग्लो मैसूर युद्ध (1766-1799)' व एंग्लो मराठा युद्ध (1772-1818) ने कंपनी के अधीन स्थानों को नर्मदा नदी के दक्षिण में विस्तृत क्षेत्र तक पहुंचा दिया। भारत के अधिकतर क्षेत्रों में अंग्रेजों के साथ मुकाबले हुए। परंतु कम्पनी विद्रोह पर काबू नहीं पा सकी। अत: विद्रोह को दबाने के लिए 1858 में एक बिल पास करके भारत का शासन ईस्ट इण्डिया कम्पनी से लेकर 2 अगस्त, 1858 को ब्रिटिश की महारानी को सौंप दिया गया। ऐसा 1857 के प्रथम स्वतंत्रता युद्ध के बाद किया गया। ब्रिटिश सरकार ने विद्रोह होने पर ईस्ट इंडिया कंपनी की निंदा की। आगे ऐसे विद्रोह को रोकने हेतु ब्रिटिश सरकार ने 'वायसराय' के पद का सृजन किया। 'वायसराय' ब्रिटिश सरकार का भारत में प्रतिनिधि था। मानचित्र (9.3) में ब्रिटिश औपनिवेशिक केन्द्र प्रदर्शित किए गए हैं।

भविष्य में ऐसी किसी आपदा से बचने के लिए कंपनी ने अपने सभी अधिकार क्राउन को सौंप दिए।

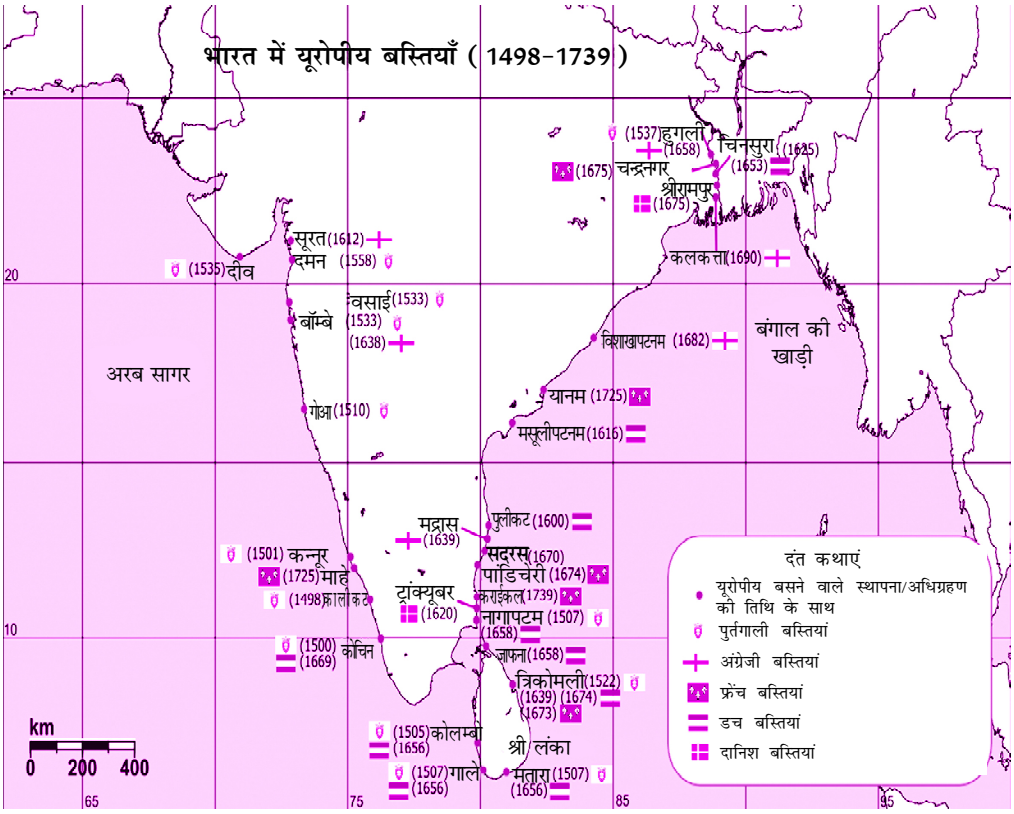

मानचित्र 9.3

क्रियाकलाप 9.1

आपने जाना कि किस प्रकार यूरोपीय भारत में आए और बंदरगाहों की स्थापना की। उन बंदरगाहों की पहचान कीजिए जहां विदेशी शक्तियों ने फैक्ट्रियां निर्मित की थीं।

9.2 तीन प्रेसीडेंसियों के गठन का विचार

प्रश्न उठता है कि प्रेसीडेंसी से क्या तात्पर्य है? यह ऐसा क्षेत्र है जहाँ से प्रेसिडेंट अपने अधीन आने वाले क्षेत्र की शासन व्यवस्था देखता है। किन्तु ब्रिटिश को इसकी आवश्यकता क्यों पड़ी? आपने देखा है कि ब्रिटिश ने फैक्ट्रियां स्थापित कर व्यापार प्रारंभ किया था। इन फैक्ट्रियों तथा इनके कर्मियों का समन्वय एक व्यक्ति के अधीन करना आवश्यक था। इसलिए चेन्नई में सेंट जार्ज किला बनाया गया और बाद में 1684 में 'मद्रास प्रेसीडेंसी' की नींव रखी गयी तथा विलियम जिफोर्ड इसके प्रथम प्रेसीडेंट बने।

यह मुख्यालय प्रशासन व सैन्य दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण हो गया। अंग्रेजों ने दक्षिण में मैसूर, तंजावूर विशाखापत्तनम तथा मुम्बई व कलकत्ता के आस-पास का क्षेत्र अपने कब्जे में ले लिए। इसी कारण देशी शासकों के छोटे राज्यों जैसे निजाम, मराठा, राजपूत और बंगाल के नवाब के साथ अंग्रेजों के युद्ध हुए।

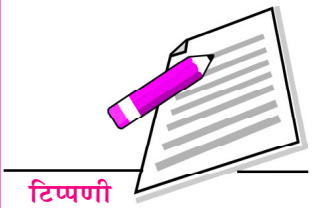

कोलकाता, चेन्नई और मुम्बई में बनाई गई प्रेसीडेंसी की मुख्य भूमिका निम्नलिखित थी-

- बंदरगाहों से व्यापार व वाणिज्य पर प्रशासकीय नियंत्रण स्थापित करना।
- व्यापारिक कंपनी की सुरक्षा तथा सम्पत्ति का निरीक्षण करना।
- एक शक्तिशाली सेना को निर्मित करना।
- ब्रिटिश कंपनी ने राबर्ट क्लाइव के नेतृत्व में शासन स्थापित करने के लिए कई युद्ध किए। दो मुख्य युद्ध थे- 1757 में प्लासी का युद्ध व 1764 में बक्सर (बिहार) का युद्ध। इन युद्धों को जीतकर कंपनी भारत की वास्तविक शासक बन गयी। 1773 तक गंगा का मैदान भी उनके अधीन आ गया।
- धीरे-धीरे बॉम्बे व मद्रास तक प्रसार किया गया। एंग्लो मैसूर युद्ध (1766-99) व एंग्लो मराठा युद्ध (1772-1818) ने सतलुज नदी से दक्षिण तक अंग्रेजी नियन्त्रण को सुनिश्चित किया।
- भारत में नागरिक कानून व सेना का शासन स्थापित करना।

एक प्रसिद्ध मुहावरा, 'ब्रिटिश साम्राज्य में कभी सूर्यास्त नहीं होता' प्रचलित था जिससे पूरे विश्व में ब्रिटिश उपनिवेशों के प्रसार का संकेत मिलता, जहां पर भी ब्रिटेन ने विजय प्राप्त की वहां उन्होंने स्थाई उपनिवेश स्थापित कर लिए। तीन प्रेसीडेंसी का गठन- मद्रास, बंगाल तथा बॉम्बे में किया गया, जो प्रशासन व सैन्य केन्द्र थे।

पाठगत प्रश्न 9.3

1. प्रेसीडेंसी का क्या अर्थ है?
2. बंगाल प्रेसीडेंसी की स्थापना कब हुई थी?

9.2.1 प्रेसीडेंसी का संगठन

प्रेसीडेंसी का गठन इसलिए किया गया ताकि वे इन क्षेत्रों पर बेहतर व सुचारू रूप से शासन कर सकें। प्रेसीडेंसी में एक गवर्नर (जो कि मुखिया थे) के अतिरिक्त चार सदस्यों की काउंसिल होती थी। इनमें सेना का मुख्य कमांडर था। हर प्रेसीडेंसी के पास स्वयं की एक सेना थी। जैसे बंगाल सेना (बंगाल प्रेसीडेंसी), मद्रास सेना (मद्रास प्रेसीडेंसी) और बॉम्बे सेना (बॉम्बे प्रेसीडेंसी) के लिए गठित की गई थी। उनमें ब्रिटिश सैनिकों व अफसरों की नियमित रेजिमेंट्स होती थीं। ब्रिटेन ने धीरे-धीरे भारतीयों को सेना में भर्ती किया। इस पाठ के आगे के अनुभाग में आप सिपाहियों के चयन की प्रक्रिया को जानेंगे। मानचित्र 9.5 में आप देखेंगे कि बंगाल प्रेसीडेंसी सबसे बड़ी और बॉम्बे प्रेसीडेंसी सबसे छोटी थी।

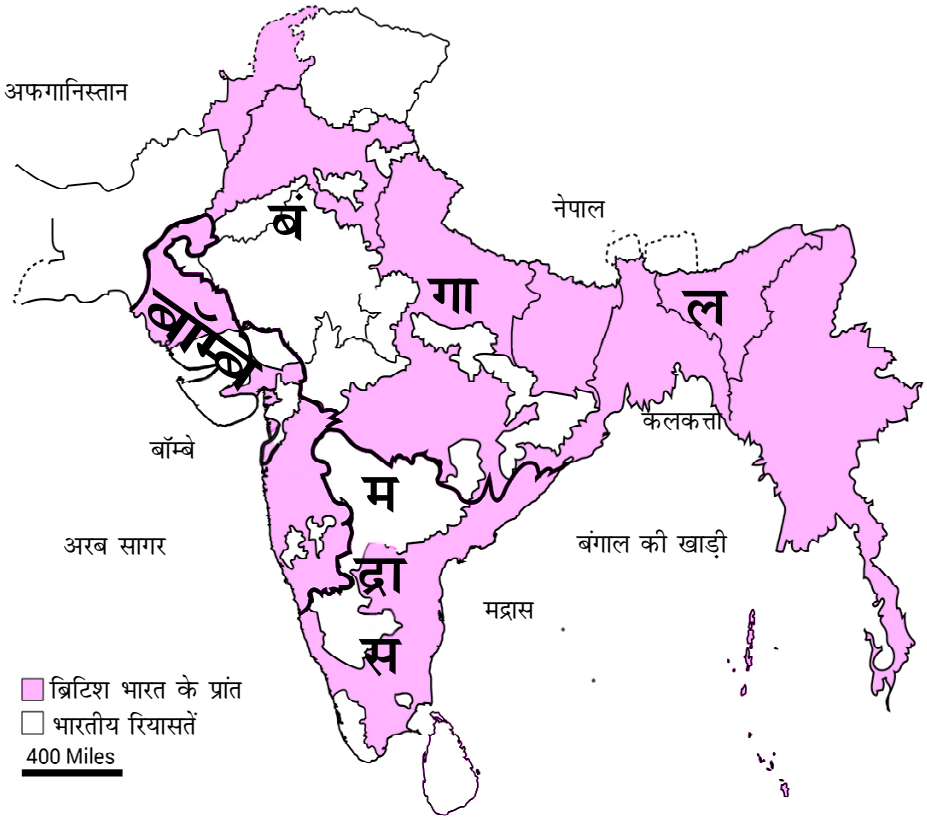

मानचित्र 9.5

9.3 देसी भारतीय सेना

पश्चिमी देश यह मानते हैं कि भारतीय सेना का आधुनिक तथा पेशेवर स्वरूप अंग्रेजों के कारण है। यह गलत है। आपने पिछले पाठों में देखा है कि हमने किस प्रकार भारतीय सेना को गठित किया एवं युद्ध लड़े। आगामी भाग में आप जानेंगे कि पश्चिमी अवधारणा के अनुसार भारतीय सेना 18वीं शताब्दी मध्य से आजादी तक किस प्रकार परिवर्तित होकर एक संगठित सेना बनी। आपने जाना है कि भारतीय, सेना बनाकर प्रभावी प्रबंधन करते रहे हैं। इसके ऐतिहासिक स्रोत वैदिक काल से भी जुड़े हुए हैं। इसलिए हम यह जाने कि किस प्रकार अंग्रेज, डच, पुर्तगाली और फ्रांसीसियों ने भारत का शोषण किया और वे 200 वर्षों तक हम पर राज करने में सफल रहे। हमारे धन व गौरव, दोनों को इन विदेशी ताकतों ने चोट पहुँचाई।

ब्रिटिश भारतीय सेना और बाद में आजाद भारत की सेना का मुख्य आधार प्रेसीडेंसी सेना है। प्रेसीडेंसी सेना का ध्येय ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारिक केन्द्रों की सुरक्षा करना था। 1748 में पूर्ण सेना को एक प्रमुख कमांडर- मेजर जनरल स्ट्रिगर लारेंस के अधीन रखा गया था। (चित्र 9.3) जिन्हें 'भारतीय सेना का पितामह' कहा जाता है। 18वीं शताब्दी मध्य से ईस्ट इंडिया कंपनी ने तीन स्थानों कोलकाता, मद्रास और मुम्बई में सेना के मुख्य यह तीन सेनाएं बंगाल सेना, मद्रास सेना और बाम्बे सेना एक-दूसरे से अलग थीं। हर किसी की अपनी रेजिमेंट थी और अंग्रेज अफसरों का समूह था।

तीनों सेनाओं में यूरोपीय रेजिमेंट भी थे जिसमें अफसर के पद पर यूरोपीय थे तथा अन्य रैंक भारतीयों को दिए गए थे। इनमें पैदल सेना, घुड़सवार और तोप सेना शामिल थे। ऐतिहासिक स्रोत इन्हें 'नेटिव इन्फैन्ट्री' अर्थात् देशी सेना कहकर संबोधित करते हैं। 18वीं शताब्दी मध्य से भारतीय सेना में नियमित रेजिमेंट बना दिए गए थे। इन सेनाओं को शाही सेना कहा जाता था क्योंकि ये सैनिक इंग्लैंड से आते थे। 1824 तक तीनों प्रेसीडेंसी की सेना लगभग 200,000 थी और 16 यूरोपियन रेजीमेंट थे। 1844 में तीनों सेनाओं की औसत शक्ति 235,446 देशी और 14,584 यूरोपीयन सैनिक थे।

औपनिवेशिक युग में समुद्र का विशेष योगदान था क्योंकि यूरोपीय शक्तियों ने संपूर्ण व्यापार समुद्री मार्ग से करना शुरू किया। समुद्री रास्ते में विभिन्न देशों पुर्तगाल, हॉलैंड, फ्रांस और इंग्लैंड के जहाज व्यापारिक दृष्टि से आपस में लड़ाई करते थे। आगे आप यह जानेंगे कि किस प्रकार चतुराई से अंग्रेजों ने फ्रेंच, डच और पुर्तगाल को हराकर भारत पर 200 वर्ष तक शासन किया। इसका पहला कारण था कि ब्रिटेन के पास मजबूत नौसेना थी। वह दुनिया के किसी कोने में अपने व्यापार की सीमा बढ़ा सकता था। दूसरा मुख्य कारण था अंग्रेजों का लालच। वह भारत की समस्त धन-सम्पदा लूटना चाहते थे और अपना व्यापार बढ़ाना चाहते थे। तीसरा मुख्य कारण था कि भारत छोटे-छोटे देसी रियासतों में बंटा हुआ था और एकता के सूत्र में बांधने वाला कोई शासक नहीं था। उत्तरी भारत में मुगलों की शक्ति क्षीण हो रही थी और दक्षिण में मराठों का वर्चस्व समाप्त हो रहा था। अंग्रेजों द्वारा भारतीयों को सेना में भर्ती करने का निर्णय आज की सेना के विकास का मुख्य कारण था। अनुशासन, कड़ी मेहनत, सहनशक्ति तथा किसी भी स्थिति में काम करने की भावना एक भारतीय सैनिक के स्वाभाविक गुण हैं।

9.3.1 भारतीय समाज में योद्धा वर्ग की पहचान

क्या आप सोच सकते हैं कि मानसिक या शारीरिक रूप से अस्वस्थ व्यक्ति सेना में शामिल हो सकता है? नहीं। सेवा प्रदान करने के लिए व्यक्ति को शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रहना जरूरी है तथा उसमें सेना के लिए आवश्यक सभी योग्यताएं होनी चाहिए। इसलिए, ब्रिटिश शासन ने सेना में 'योद्धावंश' से भर्ती की। मराठा व मैसूर की सेना ने दक्षिण में तथा बंगाली सेना ने पूर्व में अंग्रेजों के लिए समस्या खड़ी की। राजपूत, जाट व गुरखा भी मुगलों को रोकते व उनसे लड़ते थे और उनमें योद्धा के भाव थे।

इसलिए ब्रिटिश ने योद्धा कौम का एक वर्ग बनाया। इस वर्ग के अन्तर्गत सिख, जाट, राजपूत और गोरखा को शामिल किया गया। उन्होंने दक्षिण भारतीय लोगों तथा बंगालियों को शामिल नहीं किया। ब्रिटिश ने जाति के आधार पर भारतीय समाज को बांट दिया और ब्रिटिश सेना में केवल उन्हें भर्ती करते थे जिन्हें वे वफादार एवं निष्ठावान मानते थे। योद्धा कौम में ऐसे लोग थे जो बहादुर तथा सुदृढ़ शरीर वाले थे। इस वर्ग के लोगों में युद्ध लड़ने के सारे गुण थे।

क्या आप जानते हैं कि ब्रिटिश भारत में पहली सेना कौन सी थी? सर्वप्रथम बंगाली सेना का गठन हुआ था जिसमें अधिकतर सैनिक अवध प्रदेश (वर्तमान उत्तर प्रदेश) के थे। उच्च जाति के हिन्दू जो बंगाल की सेना में थे, उनका एक सामूहिक साझा उद्देश्य था। इसके अतिरिक्त

टिप्पणी

इंगलिश ईस्ट इंडिया कंपनी में भारतीय पैदल सेना में भर्ती किए जाते थे जिनके ऊपर अंग्रेज अधिकारी होते थे।

सेना में सैनिकों की वृद्धि 1763 से 1805 के मध्य अनिवार्य हो गई थी। इस काल में बंगाल की सेना में 6,680 से 64,000 सैनिक, मद्रास की सेना में 9000 से 64,000 सैनिक और बॉम्बे की सेना में 2,550 से बढ़कर 26,000 सैनिक हो गई थी।

प्रत्येक प्रेसीडेंसी, सेना का एक मुख्य कमांडर होता था। उदाहरण के लिए बंगाल सेना में एक मुख्य कमांडर (कमांडर इन चीफ) था ऐसे ही अन्य सेनाओं में भी एक मुख्य कमांडर की नियुक्ति की जाती थी। दक्षिण भारतीयों की नियुक्ति केवल फ्रांस के विरुद्ध की जाती थी। इसके अतिरिक्त दक्षिण भारतीय इंजीनियर, घुड़सवार तथा तोप के लिए ब्रिटिश सेना का हिस्सा बनते थे। 1857 तक भर्ती इसी प्रकार की गयी। किन्तु ईस्ट इंडिया कंपनी देशी सेना की मदद से विद्रोह को दबा नहीं सकी।

इसलिए इंग्लैंड की महारानी ने भारत को ब्रिटिश सरकार के अधीन कर एक स्थायी सेना के निर्माण का निर्णय लिया। इसके बाद अंग्रेजों ने आवश्यकता अनुसार सिख, डोगरा, गोरखा तथा पंजाब व बलूचिस्तान के मुस्लिमों को सेना में भर्ती किया। प्रथम तथा द्वितीय विश्व युद्ध में भी भारतीय सैनिकों को अनेक स्थान पर परखा गया।

गोरखाओं से यह वादा किया गया कि विश्व युद्ध के बाद उन्हें इंग्लैंड में महारानी की सेवा का अवसर प्रदान किया जाएगा। ब्रिटिश 'Native' या देसी शब्द का प्रयोग भारतीयों के लिए करते थे। इसलिए देसी भारतीय सेना शब्द को भर्ती के समय प्रयुक्त किया गया।

9.3.2 भारत में ब्रिटिश सेना की रैंक संरचना

हमने अभी तक देखा कि किस प्रकार भारतीय सेना में सिपाहियों की भर्ती की जाती थी। आइए अब रैंक संरचना के बारे में जानते हैं। सेना की यूनिट्स के नियंत्रण एवं कमाण्ड के लिए रैंक संरचना बहुत जरूरी थी।

सेना में रैंकों का अपना सम्मान है। हमें यह जानने की आवश्यकता है कि रैंक का सेना में क्या कार्य है? जिस प्रकार फैक्ट्री में सुपरवाइजर और मैनेजर होते हैं, उसी प्रकार सेना में रैंक संरचना होती है। इसके निम्नलिखित कारण हैं-

- युद्ध तथा शांति के दौरान सिपाहियों को कमांड तथा नियंत्रण में रखना।
- सेना का बेहतर प्रशासन
- सिपाही तथा ब्रिटिश अफसर के बीच की कड़ी के रूप में काम करने के लिए कुछ रैंक सृजित किए गए।

ब्रिटिश भारतीय सेना में भारतीय सैनिक को 'सिपाही' कहा जाता था। ये मुम्बई तथा मद्रास प्रेसीडेंसी के स्थानीय लोग थे। जैसा कि पहले बताया गया है बंगाल सेना में सिपाही उच्च ब्राह्मण परिवार से होते थे। मूलतः यह श्रृंखला इस प्रकार चलती थी, यूरोपीय कैप्टन सबसे

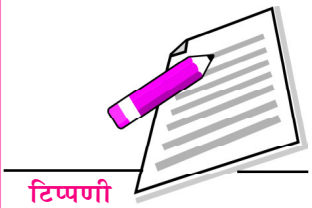

ऊपर, फिर सबआल्टर्न फिर यूरोपीय सर्जेंट मेजर, सर्जेंट मेजर के अधीन सूबेदार, जमींदार और हवलदार-नायक होते थे। प्रत्येक बटालियन में शामिल सिपाहियों को 10 बटालियनों में बांटा जाता था जिसमें एक सूबेदार, तीन जमादार, चार नायक, दो ड्रमर (ढोल बजाने वाला), एक ट्रम्पेटर (तुरही बजाने वाला) और 70 सिपाही होते थे।

पहले सूबेदार की अपनी स्वतंत्र कंपनी हुआ करती थी। अब यह कंपनी बटालियन बनाने वाली यूनिट में से एक होती है।

आपने क्या सीखा

प्रस्तुत पाठ में आपने सीखा:-

- औपनिवेशिक शक्तियां यूरोप से आईं।
- वे भारत में व्यापार और वाणिज्य के लिए आए।
- तब भारतीय राजाओं में एकता की कमी थी।
- औपनिवेशिक शक्तियां आपस में नफरत करती थी और आपस में युद्ध करती थी।
- सेना का गठन सुरक्षा की दृष्टि से तीन प्रेसीडेंसी में विभाजित किया गया था।
- ये तीन प्रेसीडेंसी- बांबे, मद्रास और कलकत्ता थी जिनमें भारतीय लोगों की भर्ती की गयी।
- ब्रिटिश भारतीय सेना में यूरोपीय लोग अफसर का कार्य करते थे जबकि निम्न स्तर पर भारतीय सैनिकों की नियुक्ति होती थी।
- रैंक संरचना को धीरे-धीरे भारतीय सेना में शामिल किया गया।

पाठांत प्रश्न

1. यूरोप के उन देशों के नाम लिखिए जो व्यापार और वाणिज्य के लिए भारत आए?
2. पुर्तगालियों ने किस प्रकार भारतीय क्षेत्र पर कब्जा जमाया?
3. अंग्रेजों ने डच आधिपत्य वाले क्षेत्र को किस प्रकार ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाया?
4. किस संयुक्त सेना को अंग्रेजों ने बक्सर के युद्ध में 1764 में हराया था?
5. 'वायसराय' पद का क्या महत्व था?
6. भारत में अंग्रेजों के द्वारा स्थापित प्रेसीडेंसी की भूमिका पर प्रकाश डालिए।
7. अंग्रेजों के डच और फ्रांसीसियों के ऊपर प्रभुत्व के कोई दो कारण लिखिए।
8. भारतीय सेना में रैंक संरचना को जोड़ने के कारण लिखिए।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

9.1

1. डच
2. वास्कोडिगामा

9.2

1. एडमिरल वानडर हेगन
2. मुसालीपट्नम, पेटापोली, पुलीकात
3. फ्रेंको मार्टिन

9.3

1. प्रेसीडेंसी से तात्पर्य उस कार्यालय से है जहां प्रेसीडेंट बैठकर अपने अधीन आने वाले क्षेत्रों पर निर्णय लेता है।
2. 1765